3

असाज़्प्रदायिक मसीहियत:
ज़्या यह ज़रूरी है?

पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए दस्तावेज़ों के अनुसार, पिन्तेकुस्त के दिन मसीह में लाए गए किसी भी चेले से ''कलीसिया में शामिल होने'' का सुझाव नहीं मांगा गया था। उन दिनों कदापि नहीं पूछा जाता था कि कोई किस ''कलीसिया'' में शामिल होना चाहता है अर्थात इन ''नये मसीहियों'' से किसी प्रचारक ने कभी ''अपनी पसन्द की कलीसिया में शामिल होने'' के लिए नहीं कहा था। उस समय केवल एक ही कलीसिया थी और उद्धार पाए हुए सब लोगों का सज़्बन्ध उसी से था, इसलिए नहीं कि वे इसमें ''शामिल'' हुए थे, या उन्हें यह कलीसिया किसी अन्य कलीसिया से अच्छी लगती थी, बल्कि इसलिए ज़्योंकि उन्हें हमारे प्रभु के बहुमूल्य लहू से खरीदा गया था। उसी दिन, घड़ी और क्षण में जब उन्हें लहू देकर छुड़ाया गया था, उन्हें उसके लोगों अर्थात प्रभु द्वारा बनाई गई देह में मिला लिया गया था ज़्योंकि वह उद्धार पाने वालों को प्रतिदिन उनमें मिला रहा था। इन लोगों से पृथ्वी पर उद्धार पाए हुए लोगों की एक मण्डली अर्थात यरूशलेम की कलीसिया बन गई थी।

धार्मिक अर्थ में कहें तो ये प्रारज़्भिक मसीही लोग मसीही होने के अलावा कुछ और नहीं थे अर्थात वे किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य नहीं थे, बल्कि असाज़्प्रदायिक मसीही थे और परमेश्वर की कलीसिया अर्थात उद्धार पाए हुओं में से थे। वे इनसे जुड़े हुए थे ज़्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया था। यदि वे इसी स्थिति में अर्थात मसीही रहते हुए मरे तो आज मुझे उन प्रारज़्भिक मसीहियों की तरह बनने और जीवन भर वैसा ही रहने से कौन रोक सकता है? कौन इस बात से इन्कार कर सकता है कि उनकी तरह मसीही बनने का यह मेरा अधिकार भी है और मेरा कर्ज़व्य भी?

ज़्या मैं इन मसीहियों से कुछ अधिक बनकर पवित्र आत्मा के प्रति विश्वासयोग्य रह सकता हूं? पृथ्वी पर आरज़्भिक मसीही किसी भी तरह की साज़्प्रदायिक कलीसिया से स्वतन्त्र थे; भाव यह कि वे किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य नहीं थे। यदि पवित्र आत्मा ने उन्हें इस प्रकार केवल मसीही बने रहने में अगुआई दी, तो ज़्या साज़्प्रदायिक मसीही बनकर हम पवित्र आत्मा की अगुआई से दूर नहीं हो जाएंगे? मसीही और केवल मसीही बनना मेरा अधिकार भी है जिसे किसी और को नहीं दिया जा सकता और अवश्य-पालनीय कर्तव्य भी; पवित्र आत्मा की बात ईमानदारी से मानने का कोई दूसरा ढंग है ही नहीं। इसलिए ज़्या मैं अपने

आप पर साज़्प्रदायिक नाम पर ज़ोर दिए बगैर दूसरों को गैर मसीही बनाने की कोशिश का आरोप लगे बिना आत्मा के निर्देश को मानने का निष्कपट प्रयास कर सकता हूं?

मेरा यह कर्ज़व्य है जो मुझे स्वर्ग की ओर से दिया गया है कि मैं हर सज़्भव प्रत्येक मनुष्य को मसीह के लहू तक ले जाऊं जिससे उसका उद्धार हो। मेरा कर्ज़व्य है कि मैं परमेश्वर के आत्मा की पवित्र और सुरक्षित अगुआई में सबको लेकर आऊं। ज़्योंकि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा बनाए गए मसीही किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया में नहीं थे, तो ज़्या परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा रखने वाले और नये नियम के समय में पवित्र आत्मा की अगुआई में चलने वाला मसीही बनने के लिए मैं हर एक की सहायता करके उसे उत्साहित कर सकता हूं? इस कारण, मैं उन सब को जो मसीही बनना चाहते हैं समझाता हूं कि आरज़्भिक दिनों में मसीही बनने के लिए पवित्र आत्मा की अगुआई में चलने वालों की तरह वे भी अपने आपको साज़्प्रदायिक कलीसिया से दूर रखें और इसके साथ कोई सहभागिता न रखें। निश्चय ही, पवित्र आत्मा की अगुआई में चलते हुए कोई मसीही किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य होकर उसके साथ सहभागिता नहीं रखेगा, ज़्योंकि परमेश्वर के आत्मा ने कभी भी किसी मसीही को साज़्प्रदायिक कलीसिया में जाने की अगुआई नहीं दी है। यह बात प्रात:काल सूर्य के उदय होने की बात से अधिक सत्य है।

फिर तो यह प्रश्न ही नहीं उठता है कि इस युग की साज़्प्रदायिक कलीसिया की नींव पवित्र आत्मा ने रखी या नहीं; ज़्योंकि यह बात तो सत्य है कि परमेश्वर ने कोई साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं बनाई। बल्कि प्रश्न यह है ''ज़्या मैं उसके पवित्र निर्देश के अनुसार केवल मसीही बनकर संतुष्ट हूं?'' मुझे अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिए, ''ज़्या मैं उसकी सादगी से संतुष्ट हूं, या मैं उसके ईश्वरीय ढंग का अपमान करने की ज़िज़्मेदारी लेने को तैयार हूं?'' यह बात गांठ बांध लें कि, परमेश्वर लोगों को अपने सेवक बनाने के लिए विवश नहीं करता बल्कि यह बात वह उनकी स्वतन्त्र इच्छा पर छोड़ देता है। वास्तव में, धर्म में कुछ लोग हमारे परमेश्वर की बुद्धि के बजाय मनुष्यों की बुद्धि के अनुसार चलने को प्राथमिकता देते हैं (जिस बुद्धि का परिणाम आज की साज़्प्रदायिक मसीहियत है)। अनुमति के साथ परमेश्वर चेतावनी भी देता है:

> परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा (सभोपदेशक 11:9ग)।

> अब, हे इस्राएल, जो जो विधि और नियम मैं तुज़्हें सिखाना चाहता हूं उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिस से तुम जीवित रहो, और जो देश तुज़्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुज़्हें देता है उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुज़्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुज़्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना (व्यवस्थाविवरण 4:1, 2)।

> जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूं उनको चौकस होकर माना करना; और

8न तो कुछ उन में बढ़ाना और न उनमें से कुछ घटाना (व्यवस्थाविवरण 12:32)।

जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है (मत्ती 7:21)।

जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी (2 यूहन्ना 9)।

मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)।

पवित्र आत्मा, अपनी सम्पूर्ण शिक्षा में और ज़ोरदार शब्दों में, किसी भी प्रकार के जोड़, घटाव, सुधार, या बदलाव की मनाही करता है। इस बात को हम उतनी ही पक्की तरह जानते हैं जितनी यह कि हम मरेंगे। साम्प्रदायिक कलीसियाओं की सारी जटिलताएं और जुगतें मनुष्य की बुद्धि द्वारा मसीह की सादगी में वचन में जोड़ी गई बातें हैं। यह सच्चाई उतनी ही पक्की है जितनी यह कि यीशु मसीह कब्र में से जी उठा। पवित्र आत्मा अपने किसी काम में किसी भी प्रकार के जोड़ की कड़े शब्दों में मनाही करता है, और मसीह के द्वारा उसने केवल असाम्प्रदायिक मसीहियत ही दी है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि धर्म में कोई श्रद्धा से परमेश्वर के आत्मा की बात मानने को प्रतिबद्ध होने के बावजूद भी साम्प्रदायिक मसीही हो सकता है। आप इसमें सुधार कैसे करेंगे? यह आपकी ज़िम्मेदारी है।